शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

# प्रसाद के नाटकों में संस्कृति, सत्ता और स्वाधीनता के लिए संघर्ष

डॉ नीलम राठी
एसोसिएट प्रोफेसर
अदिति महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

## शोध संक्षेप

*प्रसाद जी ने अपने नाटको में भारतीय और पाश्चात्य संस्कृतियों की तुलना करते हुए भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना की है। पराधीन भारतीय जनता मे राष्ट्रीय एक्य स्थापित करने हेतु स्वाधीनता के लिए संघर्ष चित्रित किया है नाग मरना जानते है अभी वे हीन पौरुष नहीं हुए है। जिस दिन वे मरने से डरने लगेंगे उसी दिन उनका नाश होगा, जो जाति मरना जानती रहेगी उसी को पृथ्वी पर जीने का अधिकार होगा। प्रसाद जी के अनुसार सत्ता में संघर्ष का प्रमुख कारण शासक द्वारा जनता का शोषण है वही से जनता मे विद्रोह का बिगुल बजता है जैसा कि चन्द्रगुप्त नाटक में स्वार्थ सिद्धि के लिए जनता पर किए जाने वाले अत्याचार और विलासिता में डूबा नन्द राष्ट्र हित पर ध्यान नहीं देता ये स्थिति ही चन्द्रगुप्त मे संघर्ष का कारण बनती है।*

## प्रस्तावना

जयशंकर प्रसाद के नाटक राज्य श्री, विशाख, जनमेजय का नाग यज्ञ, स्कन्दगुप्त, चंद्रगुप्त और ध्रुव स्वामिनी सभी में संस्कृति, सत्ता और स्वाधीनता के लिए संघर्ष विद्यमान है। जयशंकर प्रसाद ने अपने नाटकों के माध्यम से जन समाज मे सामाजिक स्थितियों के प्रति संवेदना उत्पन्न कर, निर्जीवता तोड़कर जीवंतता का संचार कर अपने युगबोध को इतिहास के आयने मे देखने का प्रयास किया है। प्रसाद जी भारतीय संस्कृति के हिमायती थे इसलिए उनके नाटकों में हमे करुणा, क्षमा, दया,प्रेम, सहनशीलता, अहिंसा, आदि भारतीय सांस्कृतिक मानव मूल्यों की स्थापना मिलती है। भारतीय संस्कृति, सहज आचरण पर बल देती है। इसलिए कामना नाटक में भौतिकतावादी संस्कृति के दुष्परिणाम चित्रित किए हैं। संतोष और विवेक मनोभावों का विनोद और विलास से संघर्ष दर्शाकर संतोष और विवेक नामक वृतियों का उत्कर्ष दर्शाया है। अजातशत्रु में गौतम की करुणा, स्कंदगुप्त में स्कंदगुप्त की शरणागत रक्षा एवं त्याग चन्द्रगुप्त में दांडयायन के वचनो में भारतीय संस्कृति के सिद्धांतों की उद्घघोषणा सी करते प्रतीत होते हैं। उनके नाटको का उद्देश्य संस्कृति की पुन:प्रतिष्टा है। नन्द दुलारे बाजपेयी के अनुसार -"उनके सभी नाटक सांस्कृतिक हैं, वे देश की स्मृद्धि के प्रतिरूप हैं। उनमे केवल यथातथ्य चित्रण नहीं है, वे केवल इतिहास का चित्रण करने वाले नाटक नहीं हैं, उनका सांस्कृतिक पक्ष भी है।"1

यही कारण है कि प्रसाद के नाटकों मे क्षमा एवं करुणा के नैतिक बल पर क्रूर हिंसक हृदय को भी परिवर्तित होते दिखाया है। जैसे अजातशत्रु में मल्लिका,प्रसेनजीत,विरुद्धक वैशाख में महाराज,

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

स्कंदगुप्त में सर्वांग भट्टार्क, राज्यश्री में शांति भिक्षु और सुरमा आदि।

## जयशंकर प्रसाद के नाटकों का विश्लेषण

प्रसाद जी अपने नाटको के माध्यम से जनता के मन में स्वाधीनता के भाव जागृत करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने चन्द्रगुप्त नाटक में 'एक देश एक राष्ट्र' का संदेश दिया तथा स्कंदगुप्त में देश की जनता को जागृत करने का प्रयास किया- "उठो स्कन्द आसुरी वृत्तियों का नाश करो,सोने वालों को जगाओ और रोने वालो को हँसाओ"। 2 "चन्द्रगुप्त का उद्देश्य भी दो भिन्न संस्कृतियों का सम्मिलन और चिरमैत्री है जिसे चंद्रगुप्त और कार्नेलिया के द्वारा स्थायी बनाने का प्रयास किया है–"संधि पत्र स्वार्थो से प्रबल नहीं होते, हस्ताक्षर तलवारों को रोकने में असमर्थ प्रमाणित होंगे -अतएव दो बालुकापूर्ण कगारों के बीच में एक निर्मल स्रोतस्विनी का रहना आवश्यक है"3 इस प्रकार हम कह सकते है कि प्रसाद ने अपने नाटकों में भारतीय और पाश्चात्य संस्कृतियों की तुलना करते हुए भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना की है। चन्द्रगुप्त नाटक में ग्रीक आक्रमण से भारतीय अस्मिता की रक्षा, चाणक्य के नीति कौशल के साथ- साथ भारतीय सांस्कृतिक, गौरवबोध एवं तपोनिष्ठ ब्राह्मण की शक्ति का परिचय भी मिलता है।

प्रसाद के नाटक 1915 ई0 से 1933 ई. तक के कार्यकाल में लिखे गए हैं। इस समय देश पर अंग्रेजों का शासन था। अंग्रेजों कि फूट डालो और राज्य करो की नीति से भारतीय जनता हिन्दू-मुस्लिम के अलग-अलग खेमों मे बंट रही थी सर्वत्र जातिगत विद्वेष कि भावना पनप रही थी मूर्ख जनता धर्म की ओट मे नचाई जा रही थी जिससे देश को अत्यंत हानी उठानी पड रही थी। प्रसाद इस स्थिति को न केवल देख रहे थे अपितु चिंतन भी कर रहे थे। परतंत्र देश के नागरिकों को स्वाधीनता का पाठ पढ़ाना था, स्वार्थ लोलुप आततायी शासको का पर्दाफाश करना था। देशवासियो को ये पाठ वो किसी विदेशी उदाहरणो से नहीं बल्कि भारतीय इतिहास के दिग्दर्शन कराकर ही करना चाहते थे एवं तत्कालीन परिस्थितियों में सुखद भविष्य निर्माण करने के महत उद्देश्य से संचालित होने के कारण ही उन्होंने अपने सभी नाटको के विषय भारतीय इतिहास से ही चुने। उनका मानना है कि "इतिहास का अनुशीलन किसी भी जाति को अपना आदर्श संगठित करने के लिए अत्यंत लाभदायक है, क्योंकि हमारी गिरि हुई दशा को उठाने के लिए हमारी जलवायु के अनुकूल जो हमारी अतीत सभ्यता है उससे बढ़कर उपयुक्त और कोई भी आदर्श हमारे अनुकूल होगा कि नहीं, इसमे हमे पूर्ण संदेह है।"4 तथा "मेरी इच्छा भारतीय इतिहास के अप्रकाशित अंश में से उन प्रकांड घटनाओं का दिग्दर्शन कराने कि है जिन्होंने हमारी वर्तमान स्थिति को बनाने का बहुत कुछ प्रयत्न किया।"5 महात्मा गांधी, बालगंगाधर तिलक, सुभाष चंद्र बॉस आदि के नेतृत्व और स्वाधीनता संघर्ष की पृष्ठभूमि मे प्रसाद ने अपने नाटको मे संघर्ष के इस युग को वाणी प्रदान की।

सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना और सत्ता प्राप्ति हेतु स्वाधीनता के लिए संघर्ष इनके सभी नाटकों का प्राण तत्व है। प्रसाद जी जानते थे कि भारतीय जनता छुद्रस्वार्थो मे फंसी है जिसके कारण देश के भीतर भी भिन्न जातियो,धर्मो और महत्वाकांक्षा के कारण व्यक्तिगत संघर्ष भी विद्यमान है।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

उनके नाटकों में संघर्ष के अनेक रूप हैं –यथा- 1- आर्य एवं अनार्य में संघर्ष अर्थात बाह्य संघर्ष -आर्य(देशी ) अनार्य/ग्रीक (विदेशी -शक हूण पुष्य मित्र मलेच्छ आदि ) जातियों मे संघर्ष। 2- आंतरिक संघर्ष --छत्रियों व ब्राह्मणों मे संघर्ष - एक ही देश की दो भिन्न भिन्न जतियों मे संघर्ष जो आपसी ईर्ष्या, द्वेष महत्त्वकांक्षा, प्रतिशोध और प्रतिहिंसा के लिए होते हैं। 3-व्यक्ति - व्यक्ति के बीच संघर्ष - इसमे कुकुर वंश की यादवी सरमा और नाग नारी मनसा मे संघर्ष,उत्तंक व कश्यप और उत्तंक और तक्षक मे व्यक्तिगत संघर्ष है। 4 ब्राह्मण एवं नाग जतियों में संघर्ष- ब्राह्मण उत्तंक व नागराज तक्षक के बीच व्यक्तिगत कारणो से प्रारम्भ हुआ संघर्ष आर्य व नाग जातीयों मे भयंकर संघर्ष को अंजाम देता है। 5-ब्राह्मण एवं बोद्धों में संघर्ष - स्कंदगुप्त और चन्द्रगुप्त नाटक के मध्य ये संघर्ष व्याप्त है। बोद्ध–"केवल सधर्म की शिक्षा ही मनुष्यों के लिए पर्याप्त है और वह मगध में ही मिल सकती है"चाणक्य-"राष्ट्र का शुभ चिंतन केवल ब्राह्मण ही कर सकते हैं। एक जीव की हत्या से डरने वाले तपस्वी बोद्ध, सिर पर मंडराने वाली विपत्तियों से,रक्त समुन्द्र कि आंधियों से आर्यवृत कि रक्षा करने में असमर्थ प्रमाणित होंगे।"6 राष्ट्र भक्त एवं राष्ट्र द्रोहियों मे संघर्ष- एक तरफ स्कन्द गुप्त का देश के लिए मर मिटना वही दूसरी तरफ प्रपंचबुद्धि, भट्टार्क आदि देशद्रोहियों का विश्वासघात के कारण संघर्ष जिसमे भटार्क द्वारा कुंभा के रणक्षेत्र मे बांध तोड़कर तहस नहस कर देना है जिसमे स्कंदगुप्त भी बह जाता है। आर्य साम्राज्य पर चारों तरफ से आक्रमण हो रहे थे तब भी देश मे क्षुद्र स्वार्थो के लिए अंतर विरोध विद्यमान थे। 7-अस्मिता के लिए संघर्ष।

उन्होंने अपने नाटको में पराधीन भारतीय जनता मे राष्ट्रीय एक्य स्थापित करने हेतु स्वाधीनता के लिए संघर्ष चित्रित किया है "नाग मरना जानते है अभी वे हीन पौरुष नहीं हुए है। जिस दिन वे मरने से डरने लगेंगे उसी दिन उनका नाश होगा, जो जाति मरना जानती रहेगी उसी को पृथ्वी पर जीने का अधिकार होगा।"7 प्रसाद जी के अनुसार सत्ता में संघर्ष का प्रमुख कारण शासक द्वारा जनता का शोषण है वहीं से जनता मे विद्रोह का बिगुल बजता है जैसा कि चन्द्रगुप्त नाटक में स्वार्थ सिद्धि के लिए जनता पर किए जाने वाले अत्याचार और विलासिता में डूबा नन्द राष्ट्र हित पर ध्यान नहीं देता ये स्थिति ही चन्द्रगुप्त मे संघर्ष का कारण बनती है। -"मगध ! मगध ! सावधान ! इतना अत्याचार ! सहना असंभव है। तुझे उलट दूँगा।"8 यहीं से चाणक्य एक योग्य शासक कि तलाश मे लग जाता है उसके मन मे शासक नन्द के प्रति विद्रोह जन्म ले लेता है फलस्वरूप स्वाधीनता कि दिशा मे संघर्ष प्रारम्भ हो जाता है।

प्रसाद जी बाहरी आक्रमण के समय राष्ट्रीय शक्तियों के जुट होकर सामना करने के पक्ष मे थे। यही कारण है कि चन्द्रगुप्त नाटक मे नाटक का नायक चाणक्य प्रांतीयता के संकीर्ण भेद को मिटाकर सभी चरित्रों में एक संघटित राष्ट्रीय सम्मान के भावों को जन्म देता है। राष्ट्रीय भावना के लिए प्रादेशिकता को हानिकारक बताया है -" तुम मालव हो और यह मागध यही तुम्हारे मान का अवसान है न ? परंतु आत्म सम्मान इतने से ही संतुष्ट नहीं होगा। मालव और मागध को भूलकर जब तुम आर्यव्रत का नाम लोगे तभी वह मिलेगा---अन्यथा आर्य वृत के सब स्वतंत्र राष्ट्र एक के अनंतर दूसरे विदेशी विजेता से पददलित होंगे।"9 चाणक्य के माध्यम से बताया

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

है कि प्रादेशिक प्रेम, सांप्रदायिक संकीर्ण मनोवृत्ति त्यागने में ही राष्ट्र हित है। इसलिए सभी विछृङ्खलित शक्तियों को चाहिए कि वे एक होकर विदेशी आक्रांताओं का सामना करें। -"यवन आक्रमणकरी बोद्ध-ब्राहमण का भेद न रखेंगे।"10 प्रत्येक व्यक्ति पूरे देश को अपना समझें, वर्ग जाति या प्रदेश को नहीं। सिहरण-"मेरा देश मालव ही नहीं गांधार भी है, यही क्या समग्र आर्यवृत है।"11 इसीलिए उन्होने चन्द्रगुप्त मे जाति कि दीवारों पर तीखे प्रहार किए। -"भाई तक्षशिला मेरी नहीं तुम्हारी भी नहीं। तक्षशिला आर्यवृत्त का एक भू भाग है।"12 चाणक्य की अगुवाई मे देश के अनेक छोटे-छोटे राज्य एक राष्ट्र के रूप मे संगठित होकर जातीय चेतना का परिचय देते है।

देश की पराधीनता का एक बड़ा कारण प्रसाद जी ने माना है कि देश पर कुछ अपराधी किस्म के स्वार्थ लोलुप अकर्मण्य और देशद्रोही लोग शासन करते है जबकि योग्य, वीर और ईमानदार लोग उनके षडयंत्रो का शिकार होकर सत्ता के प्रति उदासीन हो जाते है स्कंदगुप्त नाटक इसका सटीक उदाहरण है। स्कंदगुप्त अधिकार के प्रति उदासीन है और संभवत: उसकी उदासीनता ही राष्ट्र विप्लव का कारण बनती है। "अधिकार सुख कितना मादक और सारहीन है। अपने को नियामक और कर्ता समझने की समझने की बलवती स्पृहा उससे बेगार कराती है। उत्सवों में परिचायक और अस्त्रों में ढाल से भी अधिकार लोलुप मनुष्य क्या अच्छे हैं।"13 समकालीन परिस्थितियों से तटस्थता राष्ट्र हित में बाधक बनती है। यदि राज्य शक्ति के केंद्र में ही अन्याय होगा तब तो समग्र राष्ट्र अन्याय का क्रीडा स्थल हो जाएगा। आपको सबके अधिकारों की रक्षा के लिए अपना अधिकार सुरक्षित करना पड़ेगा। भिन्न भिन्न जातियों पुस्य मित्रों मलेछों, श्वेत, हूँण, शक आदि के भारतीय शासकों व भारतीय क्षेत्र पर आक्रमण होते रहते थे, जिनसे भारतीय जनता के हितो की रक्षा के लिए पर्णदत्त स्कंदगुप्त द्वारा उसके अधिकारों के उपयोग की अनिवार्यता तथा सुदृढ़ शासन की अनिवार्यता बताते है। --"किसलिए? त्रस्त प्रजा की रक्षा के लिए,सतीत्व के सम्मान के लिए------ युवराज! व्यंग न कीजिये। केवल पुष्य मित्रों के युद्ध से ही इतिश्री न समझिए, मलेच्छों के भयानक आक्रमण के लिए भी प्रस्तुत रहना चाहिए। चरों ने आज ही कहा है कि कपिशा को श्वेत हूणो ने पदाक्रांत कर लिया, तिस पर भी युवराज कहते हैं अधिकारों का उपयोग किसलिए।"14

प्रसाद जी मानते है कि बाहरी आक्रांता इसीलिए सफल होते है क्योंकि देश मे कुछ स्वार्थी देश द्रोही उनकी मदद करते है। भट्टार्क और अनंतदेवी जैसे पात्रो की भर्त्सना की है जो स्वार्थ लिप्त होकर देश के आंतरिक संगठन को कमजोर करते हैं, देश के प्रति विश्वासघात करते हैं और राष्ट्र द्रोह जैसा अक्षम्य अपराध करते हैं। अजातशत्रु मे भी वे यही कहते है "संघ भेद करके अपने नियम तोड़ा है उसी तरह राष्ट्र भेद करके क्या देश का नाश करना चाहते हैं"15 इन्ही देशद्रोहियों के कारण स्कंदगुप्त मरने के कगार पर पहुँच जाता है। राष्ट्रीय सम्मिलित सेना पराजित हो जाती है। उनकी इन्ही नीच मनोवृत्ति एवं दुष्कर्मों के कारण देश कितने वीर सैनिक खो चुका है। स्कंदगुप्त विषाद की मानसिकता मे पहुँच जाता है। स्कन्दगुप्त जब विषाद से युक्त होकर सब कुछ छोड़ने को तैयार हो जाते हैं तब कमला उन्हें आकर समझाती है और उन्हे विषाद से निकालकर ऊर्जा का संचार कर कर्तव्य की

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

और अग्रसर करती है–"कौन कहता है कि तुम अकेले हो। समग्र संसार तुम्हारे साथ है। स्वानुभूति को जागृत करो। यदि भविष्यत से डरते हो कि तुम्हारा पतन ही समीप है, तो तुम उस अनिवार्य स्रोत से लड़ जाओ। ---राम और कृष्ण के समान क्या तुम भी अवतार नहीं हो सकते ? समझ लो, जो अपने कर्मो को ईश्वर का कर्म समझकर करता है, वही ईश्वर का अवतार है। उठो स्कन्द ! आसुरी वृतियों का नाश करो।"16 यहाँ कमला के माध्यम से प्रसाद जी ने कर्म कि स्वाधीनता तथा सत्कर्मों का आह्वान किया है।

सत्ता निष्कंटक करने के लिए अपने नाटक जनमेजय का नाग यज्ञ ,चन्द्रगुप्त और ध्रुव स्वामिनी सभी मे अंत मे विवाह के द्वारा,रिश्तों मे बांधकर एक स्थायी समाधान देने का प्रयास किया है। "संधि पत्र स्वार्थो से प्रबल नहीं होते, हस्ताक्षर तलवारों को रोकने में असमर्थ प्रमाणित होंगे ---अतएव दो बालुकापूर्ण कागरों के बीच में एक निर्मल स्रोतस्विनी का रहना आवश्यक है"17 यही नहीं अपने नाटकों के माध्यम से वे मनुष्यता के मूल्य की स्थापना चाहते थे। जनमेजय का नाग यज्ञ में नाग और आर्य दोनों जातियां अपने दीर्घ कालीन वैमनस्य को भूलकर सदा के लिए एक हो जाती है सरमा द्वारा ये कहना -" मैं तो एक मनुष्य जाति देखती हूँ न दस्यु और न आर्य।" 18 "हम लोग व्यर्थ आपस मे लड़ते व आतताइयों को देख घर में घुस जाते हैं।"19

## निष्कर्ष

हम कह सकते हैं कि प्रसाद जी ने अपने नाटकों मे भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृतियों मे भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठा की है। सत्ता प्राप्ति केवल जनसेवक के ही हाथ मे होनी चाहिए और यदि ऐसा नहीं तो संघर्ष अवश्यंभावी है हमे उससे पीछे नहीं हटना चाहिए। अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहिए, छोटे-छोटे छुद्र स्वार्थो से ऊपर उठकर एक राष्ट्र एक देश के विषय में सोचना चाहिए।

## संदर्भ ग्रन्थ

*1 जयशंकर प्रसाद ,नन्द दुलारे बाजपेयी, पृ.144*
*2 स्कन्द गुप्त, जयशंकर प्रसाद, पृ.318*
*3 चन्द्रगुप्त, जयशंकर प्रसाद, पृ.*
*4 विशाख,जयशंकर प्रसाद, भूमिका से*
*5 वही*
*6 चन्द्रगुप्त, जयशंकर प्रसाद, पृ.64-65*
*7 जनमेजय का नाग यज्ञ,पृ. 63*
*8,9,10 चन्द्रगुप्त, जयशंकर प्रसाद, पृ.50*
*11 वही पृ.52*
*12 वही, पृ. 179*
*13 स्कंदगुप्त, जयशंकर प्रसाद, पृ.35*
*14 वही, पृ. 36*
*15 अजातशत्रु ,जयशंकर प्रसाद, पृ.33*
*16 स्कंदगुप्त, जयशंकर प्रसाद, पृ.318*
*17 चन्द्रगुप्त, जयशंकर प्रसाद, पृ.*
*18 जनमेजय का नाग यज्ञ, पृ.28*
*19 स्कंदगुप्त, जयशंकर प्रसाद, पृ.123*